कैराना-नूरपुर में विपक्षी एकता नहीं दिख रही पेज 02

नाथपंथियों को लुभाने कर्नाटक गए योगी पेज 15

हिन्दुस्तान

तरक्की को चाहिए नया नजरिया

शुक्रवार, 04 मई 2018, लखनऊ, पांच प्रदेश, 21 संस्करण, नगर संस्करण

www.livehindustan.com

वर्ष 23, अंक 104, 24 पेज, मूल्य ₹ 3.00, ज्येष्ठ, कृष्ण पक्ष, चतुर्थी विक्रम सम्वत् 2075

म्यांमार जाएंगी

विदेश मंत्री सुषमा स्वराज दो दिन के दौरे पर 10 मई को म्यांमार जाएंगी। इस दौरान दोनों देशों में कई करार होंगे। पेज14

हर साल 15 से 20 हजार टन ई-कचरे का हो रहा उत्पादन, शहर की आबोहवा को नुकसान पहुंचा रहा कचरा

ई-कचरे से सेहत को खतरा, प्रदूषण भी बढ़ा

चिंताजनक

लखनऊ | प्रमुख संवाददाता

लखनऊ में ई-कचरे की स्थिति घातक होती जा रही है। हर वर्ष लगभग 15 से 20 हजार टन ई-कचरा निकल रहा है लेकिन यह कहां जा रहा है व कैसे निस्तारण हो रहा है इसका कोई लेखा-जोखा नहीं है। इसमें मौजूद भारी तत्व शहर की आबोहवा को नुकसान पहुंचा रहे हैं साथ ही पानी भी दूषित कर रहे हैं।

दिल्ली एनसीआर में 85 हजार टन ई-वेस्ट का उत्पादनः उद्योग मंडल एसोचैम की मानें तो दिल्ली एनसीआर में ई-कचरे का उत्पादन 85 हजार टन सालाना पहुंच चुका है। इसमें साल दर साल 25 फीसदी की वृद्धि हो रही है। वर्ष 2017 में देश में कुल 25 लाख टन ई-वेस्ट पैदा हुआ। तेज रफ्तार से हो रहे इजाफे के पीछे रिसाइक्लिंग की व्यवस्था न होना, विदेशों से बड़ी मात्रा में पुराने बेकार उपकरणों का आयात व जगरूकता की कमी है। इलेक्ट्रानिक सामानों की बिक्री का लखनऊ एक बड़ा केन्द्र है।

मुनाफे के लालच ने बढ़ाई ई-कचरे की मात्राः वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. भरत राज सिंह ने कहा कि मुनाफे के लिए सेल फोन कंपनियां स्थाई तकनीक के रूप में सेल फोन नहीं बना रही हैं। दुनिया में 40 मिलियन टन इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट उत्पन्न हो रहा है। यह हर सेकेंड 800 लैपटॉप फेंकने जैसा है।

ऐसे पड़ रहा प्रभावः डा. भरतराज सिंह ने कहा कि ज्यादातर ई-कचरा जलाया जा रहा है। इससे हवा में हानिकारक विषाक्त पदार्थों बढ़ रहे हैं। इलेक्ट्रॉनिक्स में लीड जलने से हमारी केंद्रीय तंत्रिका तंत्र व गुर्दे को नुकसान पहुंचा रही है। बच्चे का मानसिक विकास प्रभावित हो सकता है।

क्या है ई वेस्ट?

इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का लम्बे समय तक इस्तेमाल करने या खराब होने के बाद नया उपकरण लाते हैं तो खराब उपकरण को ई-वेस्ट कहा जाता है। इनमें कम्प्यूटर, मोबाइल फोन, प्रिंटर्स, फोटोकॉपी मशीन, इन्वर्टर, यूपीएस, एलसीडी/टेलीविजन, रेडियो/ट्रांजिस्टर, डिजिटल कैमरा शामिल हैं। दुनिया भर में सालाना करीब 200 से 500 लाख मीट्रिक टन ई-वेस्ट पैदा होता है।

लखनऊ में कितना ई-कचरा निकल रहा है इसकी कोई जानकारी नहीं है। उसके निस्तारण भी कोई व्यवस्था नहीं है। यह कहां जा रहा है इस बारे में भी कुछ नहीं कहा जा सकता।

पंकज भूषण

पर्यवरण अभियता, नगर निगम

इलेक्ट्रानिक कचरे का उत्पादन तो बड़ी मात्रा में हो रहा है लेकिन इस बारे में ठीक जानकारी दे पाना संभव नहीं है। उसके निस्तारण के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता।

डा. राम करन, क्षेत्रीय अधिकारी, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, लखनऊ।